Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

5
2018

VOL. 152

Founder's Essay

वृक्षों के धड़ों की उनकी शाखाओं और पत्तियों से अग्रता है

कभी-कभी आपकी कोई बैठक होती है, जो अंततः किसी निष्कर्ष तक पहुंचने में असफल रहती है, यद्यपि पूरे दिन चर्चायें जोश व खरोश से चलती है। ऐसा तब होता है जब आप कुछ भी नहीं बल्कि छोटी छोटी विभेदों के उपर झगड़ते रह जाते हैं, जो मूल प्रश्नों से जुड़े नहीं हैं।

यदि आप लोगों के साथ यह निर्धारित कर चर्चा करते हैं कि आप इस परियोजना के साथ आगे बढ़ने में कितना योगदान दे सकते हैं, और यह भी तय किया है कि आप ऐसा करने के लिए कितना त्याग करना चाहते हैं, तो आप सीधे निर्णय पर पहुँच सकेंगे। लेकिन, इसके बजाय आप विविध कारणों से युक्त लम्बे भाषण से लोगों को बोझिल करते हैं कि आप कुछ नहीं कर सकते हैं। जब आप देखते हैं कि आपकी बैठक अनिर्णित क्यों समाप्त हुयी, तो आप पाएँगे कि ऐसा क्यों हुआ, क्योंकि आप यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि आप कोई नुकसान नहीं चाहते थे।

एक वृक्ष विस्तृत रूप ले लेता है, और उसकी शाखाएँ मोटी और पत्तियों से इतनी सघन हो जाती हैं कि वे हवा को बाधित करती हैं और सूरज की रोशनी को अवरुद्ध करती हैं, जिससे वृक्ष सूखने लगता है। एक संगठन के लिए भी यही सत्य है, यदि वह लापरवाही से अपनी शाखाओं और पत्तियों को बहुत महत्व देता है जो बहुत अधिक बढ़ गये हैं, और हर एक को अपनी ही शाखा की विशेष चिन्ता रहती है, संगठन का मूलभूत मकसद धूमिल होने लगता हैं।

रिश्शो कोसेइ-काइ का उद्देश्य लोगों को बुद्ध मार्ग पर आरुड़ होने में सहयोग करना है, ताकि हम दूसरों के साथ मिलकर सच्ची खुशी तक पहुँच सकें। इस मूल बिंदु पर अपनी आंखें गड़ाये रखकर, हमें बुद्धिमानी से निर्णय लेना होगा कि किन शाखाओं को काटना छाँटना है और किन को संरक्षण देना है।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co. 1997), pp50-51

Living the Lotus
Vol. 152 (May 2018)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

President's Message

खुशी से जीना

निचिको निवानो

प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

क्या अधिक आनंददायक है?

थोड़ी देर पूर्व एक विषय को सोचने में योग मिला, इस वर्ष जापान में जनवरी के आखिर से फरवरी के शुरू में, बहुत बड़ी बर्फबारी की श्रृंखला थी जो पूरे देश को ढक लिया था। रिश्शो कोसेइ-काइ के एक वार्षिक अनुष्ठान, मध्यशीतऋतु के धार्मिक प्रशिक्षण (कंसुगोयो) के दौरान बर्फ गिर गया, जिसमें सदस्यगण टोक्यो के ग्रेट सेक्रेड हॉल में या स्थानीय धर्म केंद्रों में प्रातः के पूर्व अँधेरे में त्रिविध पुण्डरीक सूत्र के पाठ के लिए वर्ष के सबसे ठंढे समय में इकट्ठा होते हैं। ऐसा लगता है कि कई ऐसे सदस्य थे जो इसे अपने धर्म केंद्रों में नहीं मना पाए। इतनी बर्फ थी कि कभी-कभी टोक्यो ट्रांजिट सिस्टम में देरी हुई। बर्फबारी के समय, किसी ने ग्रेट सेक्रेड हॉल में निम्नलिखित टिप्पणी की।

"ठीक जब हम मध्यशीतऋतु के धार्मिक प्रशिक्षण का अभ्यास करने की परेशानी लेने जा रहे हैं, क्यों इस तरह बर्फवारी हो रही है?"

बेशक, लोगों को घबराहट हो सकती है क्योंकि बर्फवारी की सुबह में घर छोड़ना और कार, बस या ट्रेन द्वारा अपने धर्म केंद्रों तक पहुँचना मुश्किल हो जाता है।

दूसरी ओर, किसी और ने कहा, "मुझे खुशी है, बर्फ के लिए धन्यवाद, मैं सबसे सच्चे अर्थ में मध्यशीतऋतु का धार्मिक प्रशिक्षण लेने में सक्षम हूँ !"

यह प्रश्न मैं आप सभी से पूछना चाहता हूँ: आपकी दृष्टि में किस व्यक्ति की सोच जीवन के अधिक सुखद तरीके का प्रतिनिधित्व करता है? मुझे लगता है कि दूसरे व्यक्ति को विजेता घोषित किया जाएगा। दूसरे व्यक्ति ने कुछ भी विशेष रूप से मुश्किल नहीं कहा। दूसरी दृष्टि के बारे में आश्चर्यजनक पक्ष है कि प्रकृति में होनेवाले परिवर्तनों को नम्र आँखों के साथ देखने और उन्हें स्वीकार करने की क्षमता, अर्थात् वैसे ही जैसे घटनायें घटित हो रही हैं। हालाँकि, ऐसा क्यों है कि इस तरह नम्रता से चीजों को स्वीकार करने से आपको ऐसा लगता है कि आपने अपने लिए और अपने आस-पास के लोगों के लिए ठंड और निद्रालुता हटा दिया है?

मुझे लगता है कि अंतर मात्र सम्यक दृष्टि के साथ चीजों को देखने का या नहीं देखने का है।

मध्यम मार्ग (मिताचार) महत्त्वपूर्ण है

हमारे लिए ऐसा सोचना समुचित हो सकता है कि बौद्ध धर्म के आष्टांगिक मार्ग का सम्यक दृष्टि कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम आसानी से प्राप्त नहीं कर सकते हैं या केवल प्रबुद्ध व्यक्ति इसे प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि हम “सम्यक” शब्द के भार से अभिभूत हैं।कुछ लोग तत्क्षण कह सकते हैं कि “सम्यक दृष्टि से चीजों को देखने” का अर्थ “असंभव करना है,” लेकिन, जैसा कि पूर्व में उल्लिखित बर्फीले दिन के उदाहरण के साथ, प्रकृति की क्रियाशीलता को उसी रूप में देखने जैसा है- यही सम्यक दृष्टि है, है ना?

सम्यक दृष्टि का यह भी अर्थ है कि जो कुछ भी व्यापक रूप से हो रहा है उसे स्वीकार करते हुए, चीजों को उसी के प्रकाश में देखना--आपको क्या असंतुष्ट करता है या जब आप इसे गलत दृष्टि या पक्षपातपूर्ण दृष्टि, या दूसरे शब्दों में, आत्म केंद्रित दृष्टि से देखते हैं--और, परिणामस्वरूप, यह आपकी भावनाओं के सहज ही अनुकूल बैठता है। बुद्ध के ज्ञान और सभी वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को पूर्णतः समझना निश्चित रूप से कठिन है, लेकिन बर्फीले दिन के उदाहरण की तरह, वस्तु (ज्ञान) को देखने का तरीका पूर्व से ही स्वाभाविक रूप से हमारे दैनिक जीवन में काम कर रहा है।

हाल ही में, हृदय के शल्योपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी मिल जाने वाले व्यक्ति ने शांतभाव से कहा कि, “अब तक, मैं इस तथ्य के लिए कभी भी आभारी नहीं था कि मेरा हृदय धड़क रहा है। हालाँकि, ऐसा समझने का कोई कारण नहीं है।” जब मैंने यह सुना, तो मुझे लगा जैसे मुझे नयी शिक्षा मिल रही है कि वास्तव में सम्यक दृष्टि क्या है।

ऐसा करने के लिए इच्छा प्रकाशन के बिना ही हृदय अविछिन्न गति से धड़कता है। जब उस व्यक्ति ने सीधे इस प्राकृतिक भव्यता को देखा, तो उसकी नवीकृत भावनाओं ने बीमारी की चिंता को मिटा दिया। वह पूरी तरह से आश्वस्त अनुभव किया, यह उसकी अभिव्यक्ति से प्रकट है। मुझे नयी शिक्षा मिली है कि यदि हम सम्यक दृष्टि से देखते हैं कि हम यहाँ और अब जीवित हैं, तो हमारी बीमारी भी आभार प्रकट करने का विषय बन जाता है।

संसार की वास्तविकता के प्रकाश में वस्तुओं को देखना—सभी वस्तुयें अनित्य है, सभी वस्तुयें अनात्म हैं और सभी वस्तुयें दुःख है—यही सम्यक दृष्टि है। आष्टांगिक मार्ग का प्रथम अंश दुःख से मुक्ति का सम्यक मार्ग है। बुद्ध की देशना अनुसार जीने का यह आधार है, इसे ही सम्पूर्णता कहते हैं।

जबकि बौद्ध धर्म हमें जीवन का मार्ग दिखलाता है, अर्थात् मध्यम मार्ग,जो सुखानुयोग के अतिरेक के दुःख से और तपसचर्या या मिताचार के अतिरेक के दुःख से विरहित हैं। इसलिए धार्मिक अनुष्ठान को कठिन नहीं होना चाहिए। इस अवसर पर “सम्यक” के अर्थ का विचार कर, मैं आशा करता हूँ कि मैं आप सभी के साथ मिलकर कुछ समय के लिए आष्टांगिक मार्ग का अभ्यास चालू रखने की आशा है।

From Kosei, May 2018.

कलगी में मणि का दृष्टान्त

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र
सुखविहार परिवर्त
कलगी में मणि का दृष्टान्त

एक अविश्वसनीय रूप से महाशक्तिशाली चक्रवर्ती राजा था। वह शान्ति स्थापित करने की कामना से अपने क्षेत्र के आस पास के छोटे छोटे राज्यों को अपने अधीन लाने की चेष्टा की, परन्तु, उन राज्यों के राजाओं ने अधीनता स्वीकारने से इन्कार कर दिया। राजा ने सैनिकों को उन छोटे छोटे राज्यों के साथ युद्ध कर राजाओं को अपने अधीन लिया, जिन्होंने अपने लोगों को पीड़ा दी है।

सैनिकों में जिन्होंने विशेष रणकौशल का प्रदर्शन किया था, उनकी उपलब्धियों की कोटि के अनुसार महान राजा की ओर से उन्हें पुरस्कार प्राप्त हुआ।राजा ने सैनिकों के प्रदर्शन की प्रशंसा की और कुछ को रहने के लिए घर मकान दिया, दूसरों को फार्म लैण्ड, मकान के लिए जमीन, ग्राम या नगर; और दूसरों को वस्त्र, आभूषण, असाधारण धनदौलत, स्वर्ण, रजत, लाजवर्त; जबकि अन्य दूसरों को शासन का भार दिया। फिर भी, राजा ने अपने ताज का सम्मान मणि को कभी भी किसी को नहीं दिया।

कलगी का मणि इस संसार में एकमात्र सर्वोच्च कोश है। मणि इतना मूल्यवान है कि यदि राजा ने इसे किसी को दे दिया, जो प्राप्त करता है और उसके आस-पास के लोग आश्चर्यचकित होंगे और परेशानी में पड़ जायेंगे। फिर भी, राजा हमेशा इसे किसी को भी देने के लिए तैयार था जिसने अतुल्य यशस्य उपलब्धियाँ पायी हैं।

व्याख्या

महान चक्रवर्ती राजा बुद्ध का प्रतीक है और वे सैनिक, जिन्होंने छोटे छोटे राज्यों से युद्ध किया, उनके द्योतक हम हैं। जिन छोटे छोटे राज्यों ने महान चक्रवर्ती राजा की अधीनता स्वीकारना नकार दिया था, वे उनके द्योतक है जो सांसरिक तृष्णाओं और मानवीय भ्रान्ति मूलक विचारों में पूरे निमग्न हैं।

हम में सभी प्रकार की सांसारिक इच्छायें हैं। बुद्ध ने इनमें प्रत्येक इच्छा के लिए समुचित देशना की विवेचना की है जो हमें आसक्तियों से मुक्ति दिलाने के निमित्त है।हमारे हृदय में जो अकुशल प्रवृत्तियाँ हैं उन्हें धर्मदेशना को सीखकर और अभ्यास द्वारा निर्मूल करने का प्रयत्न करते है और बुद्ध सदा हमें प्रोत्साहित करते हैं तथा खुश करने की कोशिश करते हैं। हमारे प्रयत्नों के प्रतिफल रूप में, हमें आध्यात्मिक शान्ति, पीड़ा से मुक्ति, और मन की अन्य शांतिपूर्ण अवस्थायें की प्राप्ति होती हैं, जिन्हें दृष्टान्त में घरों, ग्रामों,वस्त्रों, असामान्य कोश और लोगों के रूप में दर्शाया गया है।

फिर भी, शाक्य मुनि बुद्ध ने पुण्डरीक सूत्र की लम्बे समय तक व्याख्या नहीं की है। राजा के किरीट की कलगी का मणि पुण्डरीक सूत्र का प्रतीक है। पुण्डरीक सूत्र सर्वोपरि धर्मदेशना है जो समस्त मानव प्राणियों को बुद्ध के बोधिज्ञान की ओर अग्रसर कराता है। फिर भी, यदि जिनको बुद्ध की धर्मदेशना का छिछला ज्ञान है, वे पुण्डरीक सूत्र को सुनकर भ्रमित हो सकते हैं या उनमें प्रतिरोध का भाव आ सकता है। इसलिए शाक्यमुनि ने इस सर्वोच्चतम धर्मदेशना को अपने आप तक सीमित रखा है जब तक कि हम पुण्डरीक सूत्र को स्वीकारने की आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो जाते हैं।

हमें अपनी सांसारिक इच्छाओं से मुक्ति पाने के और पुण्डरीक सूत्र, सर्वोत्तम कोश की देशना को समझने के लिए हृदय को परिशुद्ध करने के माध्यम के अभ्यास की आवश्यकता है। जैसे-जैसे हम अपने हृदय को पोषित करना और दूसरों के लाभ के लिए कुशल कर्मों का संग्रह करना जारी रखते हैं, हम पुण्डरीक सूत्र के वास्तविक अर्थ को गहराई से समझने में सक्षम हो जाते हैं।

अब, जैसा कि बुद्ध को बोध हुआ कि हमारा हृदय पुण्डरीक सूत्र को समझने के लिए यथेष्ट परिशुद्ध हो गया है, उन्होंने अन्ततः हमारे लिए सर्वोत्तम देशना की विस्तार में विवेचना की है। बुद्ध ने हम पर भरोसा किया और हमें सर्वोत्तम कोश को दिया। आइए हम इसे अपने पूर्ण हृदय से ग्रहण करें और धारण करें और स्वयं को परिश्रमपूर्वक संलग्न करें, ताकि हम स्वयं इसके वास्तविक मूल्य को आत्मसात कर सकें।

Editorial Supervision by Chuo Academic Research Institute

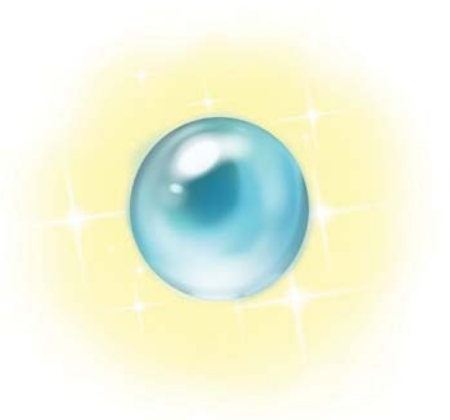

*Commentary is based on *Buddhism for Today* and *The Threefold Lotus Sutra: A Modern Commentary*, both by Nikkyo Niwano.

बुद्ध की धर्मदेशना के अनुसार जीवन जीना

मुझे याद आता है, जब मैं जुनियर हाई स्कूल का छात्र था, मैं वर्ष के महीनों के इंगलिश नामों में मई, जो सबसे छोटा है, कंठस्थ हो गया था। मई के विषय कहें तो, मुझे अब भी इंगलिश मुहावरा याद आता है: “मार्च का बयार और अप्रील का बौछार मई का फूल खिलाता है।” यह मुहावरा हमारे लिए प्रकृति के आश्चर्य को गहराई से परिचय कराता है।

प्रेसिडेण्ट के मई महीने के संदेश “खुशी से रहना” में, प्रेसिडेण्ट निवानो ने विनम्र आँखों से देखने और प्रकृति में परिवर्तनों को सौहार्दपूर्ण ढंग से स्वीकार करने के महत्व का हमारे साथ साझा किया है।

बौद्ध धर्मदर्शन के मध्यम मार्ग की हमें शिक्षा है कि वस्तुओं को उनके असल रूप में देखना और आष्टांगिक मार्ग के सम्यक दृष्टि की अवधारणा सत्य के प्रकाश में वस्तुओं को देखने का दिग्दर्शन करता है।

अब इस मौसम में हमने प्रकृति के अद्भुत कार्य के हमारी प्रशंसा को पुनरुज्जीवित कर दिया है, और आशा करता हूँ कि हम दृढ़ता से वस्तुओं को देखने की बुद्ध की दृष्टि को समझेंगे।

रेवरेन्ट कोईची साइतो

निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

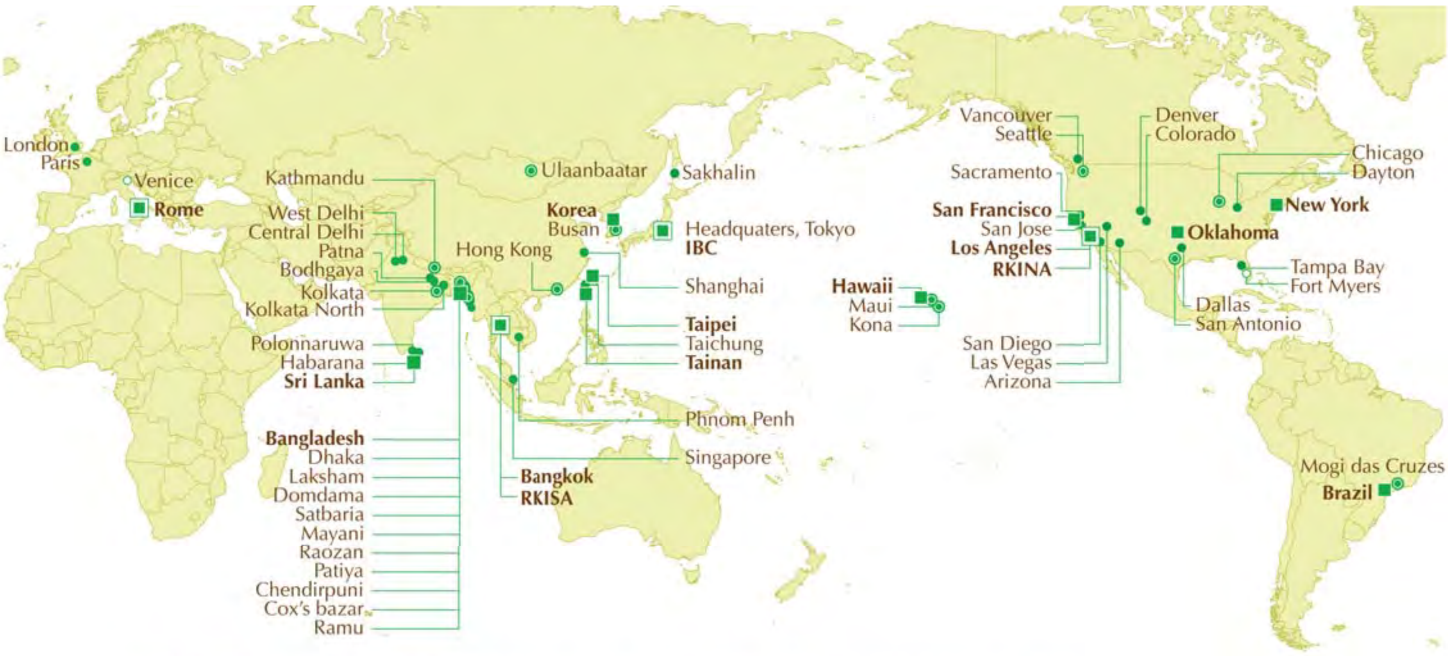

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

We welcome comments on our e-newsletter Living the Lotus. Please send us your comments to the following e-mail address.
E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers 2018

Rissho Kosei-kai International
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 *e-mail*: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654 *e-mail:* murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung

Rissho Kosei-kai of Tainan
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Venezia
Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi
66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka, New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center
Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax*: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai